भूगोल में मात्रात्मक क्रांति
Quantitative Revolution in Geography

G Vishal
V.S.J. College Rajnagar

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात वर्णनात्मक भूगोल को अस्वीकार किया गया एवं अमूर्त सिद्धांत तथा मॉडल के निर्माण पर बल दिया गया। इस कार्य के लिए भूगोल में सांख्यिकीय तकनीकों का वृहत पैमाने पर उपयोग किया गया। इसे ही मात्रात्मक क्रांति के नाम से जाना जाता है। मात्रात्मक क्रांति के फलस्वरूप भूगोल के परिणामों में वस्तुनिष्ठता आयी तथा विषय के वैज्ञानिक विश्लेषण में सहायता मिली।

भूगोल में मात्रात्मक विधि का प्रयोग सर्वप्रथम जिफ (Zipf) द्वारा किया गया, जिन्होंने नगरीय भूगोल के क्षेत्र में 1949 में कोटि आकार नियम (Rank-Size-Rule) का प्रयोग किया। मात्रात्मक क्रांति की प्रथम अवस्था (1950-58) में निदर्शन तकनीक, माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन जैसे सरल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। इस अवस्था में बी० जे० एल० बेरी, किंग, डेविड हार्वे एवं एकरमैन जैसे विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान किया। द्वितीय अवस्था (1958-68) में कोरिलेशन (Correlation) रिग्रेशन (Regression) जैसी सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया। मात्रात्मक क्रांति की तृतीय अवस्था (1968-78) में जटिल सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया। इसके विकास में चौर्ले (Chorley), हैगेट (Haggett), मोसर (Moser), स्कॉट (Scott) आदि विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान किया। इस अवस्था में नजदीकी पड़ोसी सांख्यिकी (Nearest Neighbourhood Analysis) तथा बहुचर विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। वर्तमान समय में मात्रात्मक क्रांति की चौथी अवस्था में भूगोलवेत्ताओं द्वारा ~~[illegible]~~ एरियल फोटोग्राफी (Areal Photography),

Scanned with CamScanner

PAGE NO.:
DATE:

कम्प्यूटर एवं सुदूर संवेदी (Remote sensing) तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।

- L.C. King ने नगरीय बस्ती प्रारूप को बतलाने के लिए Nearest Neighbourhood Technique का प्रयोग किया।
- व्यवहारिकतावादी (Behavioural) एवं मानवतावादी भूगोलवेत्ताओं द्वारा मात्रात्मक क्रांति की आलोचना की गयी है। स्पेट (O.H.K. Spate) एवं ब्रायन बेरी (Brain Berry) ने भी मात्रात्मक क्रांति की आलोचना की।
- मात्रात्मक क्रांति मे आनुभविक तथ्यों जैसे भाव, आवेग, विश्वास, भय, इच्छा आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। अत: इसे भौगोलिक वास्तविकताओं की व्याख्या के लिए साधन के रूप मे स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
- मात्रात्मक विधि के लिए गणितीय योग्यता एवं विशिष्ट आंकड़ो की आवश्यकता होती है, जिसका विकासशील देशों मे प्राय: अभाव होता है।
- 1970 के दशक मे हार्वे जैसे मात्रात्मक क्रांति के समर्थक ने भी इसे त्याग दिया एवं यह कहा कि इस क्रांति ने अपना कार्य पूरा कर लिया है एवं अब घटते हुए सीमांत प्रतिफल प्रारंभ हो गया है।
- स्टाम्प ने मात्रात्मक क्रांति का विरोध किया एवं इसे शेक युद्ध की संज्ञा दी। उनके अनुसार मात्रात्मक के अनेक बिन्दु राजनैतिक विचारधारा से मेल नहीं खाते हैं एवं यह इसके अनुयायियों के लिए धर्म के समान है तथा इसका स्तूनदेवा बड़ा कम्प्यूटर है।
- मानववादी भूगोलवेत्ता मात्रात्मक विधि को यंत्रीकृत अध्ययन मानते हैं जिसमे मानवीय दृष्टियों की अवहेलना होती है।

Scanned with CamScanner